पाठ-11

अपठित गद्यांश

ऐसे गद्यांश को अपठित गद्यांश कहते हैं जो कि पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक से सम्बद्ध नहीं होता। प्रश्न-पत्र निर्माता प्रश्न-पत्र में किसी पत्रिका, समाचार पत्र या अन्य किसी भी पुस्तक (पाठ्यक्रम के अतिरिक्त) से कोई गद्यांश दे सकता है। इसलिए विद्यार्थियों को चाहिए कि हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक रचनाओं को नियमित रूप से पढ़ने की आदत को विकसित करें। विद्यार्थी जितना पढ़ने की आदत डालेंगे उतना ही वे अपठित गद्यांशो को पढ़कर समझने लगेंगे। इससे अपठित गद्यांशों के अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना उनके लिए सरल होगा।

परीक्षा में अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएंगे :

1. पहले तीन प्रश्न गद्यांश की विषय-सामग्री से सम्बन्धित होंगे।
2. चौथा प्रश्न गद्यांश में से दो कठिन शब्दों के अर्थ लिखने से संबंधित होगा।
3. पाँचवाँ प्रश्न गद्यांश का शीर्षक/केंद्रीय भाव लिखने से संबंधित होगा।

'अपठित गद्यांश' के अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिएं :

(i) गद्यांश को कम से कम दो बार पढ़ लेना चाहिए। यदि फिर भी उसका मूल भाव स्पष्ट न हो तो उसे एक बार फिर पढ़ लेना चाहिए। जब गद्यांश का मूल भाव समझ आ जाए तो उसके उत्तर देना आसान हो जाएगा।

(ii) गद्यांश की विषय सामग्री से संबंधित प्रश्नों के उत्तर उसमें ही होते हैं। अत: अपनी ओर से उनके उत्तर नहीं देने चाहिएं।

(iii) पूछे गए कठिन शब्दों के अर्थ भली-भांति सोच-विचार कर लिखने चाहिए। इसमें जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए।

(iv) जब गद्यांश का मूल भाव स्पष्ट हो जाए तो उस का उपयुक्त एवं संक्षिप्त शीर्षक सोच-विचार कर लिखना चाहिए।

उदाहरण

I मुंशी प्रेमचंद जी का जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस के लमही नामक ग्राम में हुआ। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। उनका बचपन अभावों में ही बीता और हर प्रकार के संघर्षों को झेलते हुए उन्होंने बी. ए. तक शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की किन्तु

Scanned with CamScanner

असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और पूरी तरह लेखन कार्य में जुट गए। वे तो जन्म से ही लेखक और चिन्तक थे। शुरू में वे उर्दू में नवाबराय के नाम से लिखने लगे। एक ओर समाज की कुरीतियों और दूसरी ओर तत्कालीन व्यवस्था के प्रति निराशा और आक्रोश था। उनके लेखों में कमाल का जादू था। वे अपनी बात को बड़ी ही प्रभावशाली ढंग से लिखते थे। जनता उनकी लेखनी से प्रभावित होने लगी। उधर अंग्रेज़ सरकार के कानों में भी उनकी लेखनी की खबरें पहुँच गयीं। अंग्रेज़ सरकार ने उनके लेखों पर रोक लगा दी। किन्तु, उनके मन में उठने वाले स्वतंत्र एवं क्रांतिकारी विचारों को भला कौन रोक सकता था? इसके बाद उन्होंने 'प्रेमचंद' के नाम से लिखना शुरू कर दिया। इस तरह वे धनपतराय से प्रेमचंद बन गए। 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम' 'निर्मला' 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं जिनमें सामाजिक समस्याओं का सफल चित्रण है। इनके अतिरिक्त उन्होंने 'ईदगाह', 'नमक का दारोगा', 'दो बैलों की कथा' 'बड़े भाई साहब' और 'पंच परमेश्वर' आदि अनेक अमर कहानियाँ भी लिखीं। वे आजीवन शोषण, रूढ़िवादिता, अज्ञानता और अत्याचारों के विरुद्ध अबाधित गति से लिखते रहे। गरीबों, किसानों, विधवाओं और दलितों की समस्याओं का प्रेमचंद जी ने बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। वे समाज में पनप चुकी कुरीतियों से बहुत आहत होते थे, इसलिए उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास इनकी रचनाओं में सहज ही देखा जा सकता है। निःसंदेह वे महान उपन्यासकार व कहानीकार थे। सन् 1936 में इस महान लेखक का देहान्त हो गया।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रश्न 1. मुंशी प्रेमचंद जी का वास्तविक नाम क्या था ?

उत्तर मुंशी प्रेमचंद जी का वास्तविक नाम धनपत राय था।

प्रश्न 2. मुंशी प्रेमचंद जी ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र क्यों दे दिया ?

उत्तर उन्होंने असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

प्रश्न 3. वे आजीवन किसके विरुद्ध लिखते रहे ?

उत्तर वे आजीवन शोषण, रूढ़िवादिता, अज्ञानता और अत्याचारों के विरुद्ध लिखते रहे।

प्रश्न 4. 'अबाधित' तथा 'आहत' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर **'अबाधित'** – बिना किसी रुकावट के, **'आहत'** – दुःखी।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर महान उपन्यासकार व कहानीकार : मुंशी प्रेमचंद।

Scanned with CamScanner

II सच्चरित्र दुनिया की समस्त सम्पत्तियों में श्रेष्ठ सम्पत्ति मानी गयी है। पृथ्वी, आकाश, जल, वायु और अग्नि पंचभूतों से बना मानव-शरीर मौत के बाद समाप्त हो जाता है किन्तु चरित्र का अस्तित्व बना रहता है। बड़े-बड़े चरित्रवान ऋषि-मुनि, विद्वान, महापुरुष आदि इसका प्रमाण हैं। आज भी श्रीराम, महात्मा बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि अनेक विभूतियाँ समाज में पूजनीय हैं। ये अपने सच्चरित्र के द्वारा इतिहास और समाज को नयी दिशा देने में सफल रहे हैं। समाज में विद्या और धन के अर्जन की अति आवश्यकता रहती है किन्तु चरित्र के अर्जन के बिना विद्या और धन भला किस काम का? अतः विद्या और धन के साथ-साथ चरित्र का अर्जन अत्यंत आवश्यक है। यद्यपि लंकापति रावण वेदों और शास्त्रों का महान ज्ञाता और अपार धन का स्वामी था, किन्तु सीता-हरण जैसे कुकृत्य के कारण उसे अपयश का सामना करना पड़ा। आज युगों बीत जाने पर भी उसकी चरित्रहीनता के कारण उसके प्रतिवर्ष पुतले बनाकर जलाए जाते हैं। चरित्रहीनता को कोई भी पसन्द नहीं करता। ऐसा व्यक्ति आत्मशांति, आत्मसम्मान और आत्मसंतोष से सदैव वंचित रहता है। वह कभी भी समाज में पूजनीय स्थान नहीं ग्रहण कर पाता है। जिस तरह पक्की ईंटों से पक्के भवन का निर्माण होता है उसी तरह सच्चरित्र से अच्छे समाज का निर्माण होता है। अतएव सच्चरित्र ही अच्छे समाज की नींव है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रश्न 1. दुनिया की समस्त सम्पत्तियों में किसे श्रेष्ठ माना गया है ?

उत्तर दुनिया की समस्त सम्पत्तियों में सच्चरित्र को श्रेष्ठ माना गया है।

प्रश्न 2. रावण को क्यों अपयश का सामना करना पड़ा ?

उत्तर सीता हरण के कारण रावण को अपयश का सामना करना पड़ा।

प्रश्न 3. चरित्रहीन व्यक्ति सदैव किससे वंचित रहता है ?

उत्तर चरित्रहीन व्यक्ति आत्मशांति, आत्मसम्मान और आत्मसंतोष से सदैव वंचित रहता है।

प्रश्न 4. 'श्रेष्ठ' तथा 'प्रमाण' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर **'श्रेष्ठ'** - सबसे बढ़िया, **'प्रमाण'** - सबूत।

प्रश्न 5. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर श्रेष्ठ सम्पत्ति : सच्चरित्र।

Scanned with CamScanner